मालव राजधानी उज्जयिनी को ही है। उज्जयिनी के प्रति कालिदास का प्रेम सर्वत्र मुखर है। मेघदूत में यक्ष अपनी प्रियतमा के पास जाने वाले मेघ से आग्रह करता है -

वक्रः पन्थाः यदपि भवतः प्रस्थितस्योत्तराशां।
सौधोत्संग प्रणयविमुखो मास्म भूरुज्जयिन्याः॥

अधिकांश भारतीय विद्वान् ईसा से ५७ वर्ष पूर्व उनकी स्थिति मानते हैं तो कुछ लोग उन्हें ईसा की चौथी अथवा छठी शताब्दी तक खींचते हैं। कालिदास सम्राट् विक्रमादित्य के समसामयिक थे, जिनका प्रवर्तित विक्रम संवत ईस्वी सन् से ५७ वर्ष पूर्व चलता है। किन्तु ये विक्रमादित्य कौन थे इनका राज्यकाल कब था - इसमें बहुत विवाद है। कुछ पश्चिमी विद्वानों का कथन है कि विक्रमादित्य किसी का नाम नहीं था यह उपाधि मात्र थी जिसे समय-समय पर कई राजाओं ने धारण किया था। भारतीय पारम्परा एवं जनश्रुतियों के अनुसार विक्रमादित्य की राजधानी उज्जयिनी थी। उन्होंने एक भीषण युद्ध में विदेशी शक आक्रान्ताओं का समूल निर्दलन किया था और अपनी उस महान् विजय के उपलक्ष्य में उन्होंने एक नूतन संवत्सर का प्रचलन किया था, जो आज विक्रम-संवत के नाम से प्रसिद्ध है। इतने विपुल प्रमाणों एवं तथ्यों के बाद भी विक्रमादित्य के सम्बन्ध में यह कहना कि वे थे ही नहीं, अथवा ऐसा कोई राजा हुआ ही नहीं यह यूरोपीय विद्वानों का पूर्वाग्रहग्रस्त विचार के सिवा कुछ नहीं है। पाश्चात्य विद्वान फर्ग्युसन का कथन है कि ५४४ ई० में उज्जयिनी में हर्ष नाम का एक राजा था जिसने विक्रमादित्य की उपाधि धारण की थी। उसी ने शकों को परास्त किया था और अपनी विजय की स्मृति में उसी ने एक संवत चलाया था जो आज विक्रम संवत के नाम से प्रसिद्ध है। यह मत नितान्त अशुद्ध एवं भ्रामक है क्योंकि यदि हर्ष ने ५७ या ५४४ ई० के आस पास शकों को पराजित किया तो ६०० वर्ष पूर्व का समय लेकर एक नूतन संवत चलाने की उसे क्या जरूरत थी? इसके उत्तर में फर्ग्युसन यह कहते हैं कि कालिदास की रचनाओं में शकों, हूणों, पल्लवों तथा यवनों की चर्चा आई है और ये सभी भारतभूमि में